

अदम बदम अदम बदम
चलो चलें कदम-कदम

रात के हम टिम टिम टिम
भोर के हम चम चम चम
खर खर खरगोश हम
टिपिर टिपिर ओस हम

छाँटा

अंक 3 वर्ष 1

अगस्त - सितम्बर, 2016

चंदू की कहानी

चन्दू की नानी
कहे कहानी

एक था शरबत
एक था पानी

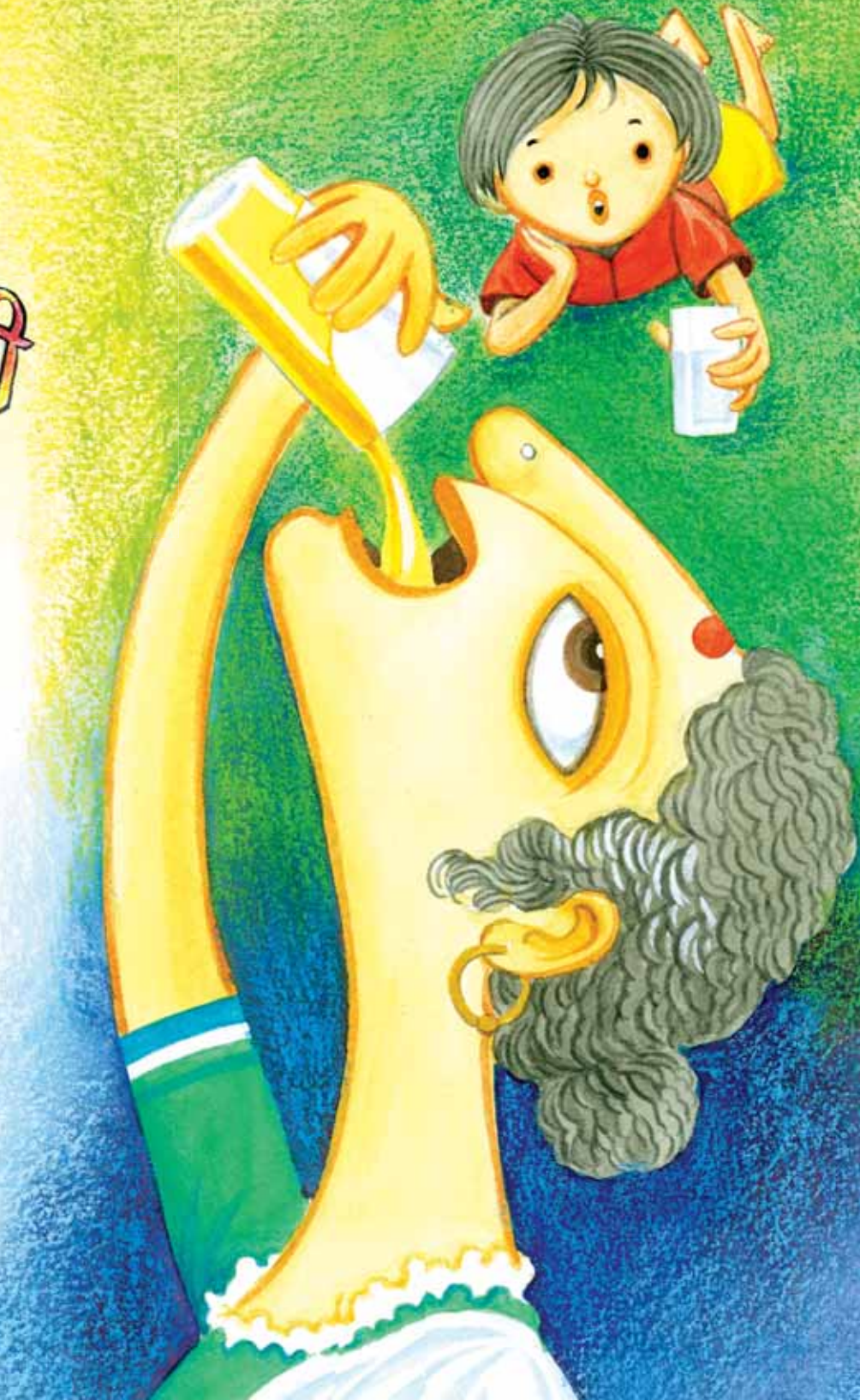
नानी पिए शरबत
चन्दू पिए पानी

रूठ गया चन्दू
खतम कहानी

(किस कवि ने यह बेमिसाल कविता लिखी है,
हम पता नहीं लगा पाए।
आप जानते हों तो हमें ज़रूर बताएँ)



चित्र: पार्थो सेनगुप्ता





बात उन दिनों की है जब हाथी बिलों में रहते थे। हाथी अपना बिल बनाते। पेट भर पत्तियाँ खाते और फिर अपने बिल में जाकर आराम से सो जाते। और चूहे? वे बेचारे ज़मीन पर इधर-उधर मारे-मारे

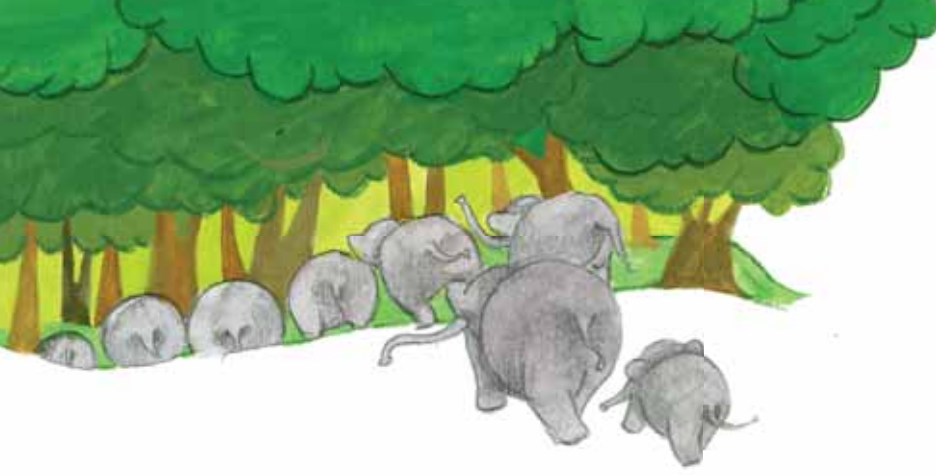
फिरते थे। बड़े-बड़े जानवर इधर से उधर दौड़ते रहते। और चूहे उनके पैरों तले आते रहते। चूहे बड़े परेशान थे। एक बार सब चूहों ने मिलकर कोई तरकीब निकालने की सोची। कई घण्टे



गुज़र गए पर कोई तरकीब नहीं सूझी। तभी एक चूहे के बच्चे ने कहा, “मेरे पास एक तरकीब है।” सभी चूहों ने उसकी तरकीब सुनी। तरकीब सचमुच कमाल की थी।



सबने मिलकर तय किया कि कल चूहे का वही बच्चा हाथियों से मिलने जाएगा। चूहे का बच्चा हाथियों के मोहल्ले पहुँचा। उसने ज़ोर-से आवाज़ लगाई। सारे के सारे हाथी अपने बिलों से बाहर आ गए। चूहा बोला, “तुम्हें हमारी परवाह नहीं है। पर हमें तुम्हारी बड़ी फिकर लगी रहती है।”



बुजुर्ग हाथी बोला, "किस बात की फिकर?" चूहे का बच्चा बोला, "आप बिल बनाते हैं तो उसके पास मिट्टी का एक पहाड़ बन जाता है।" "हाँ, तो इससे क्या!" हाथी बोला। चूहे का बच्चा बोला, "पर आप पहाड़ों पर नहीं रह सकते। सोचिए, अगर इसी तरह आप पहाड़ बनाते चले गए तो क्या होगा। एक दिन हर तरफ पहाड़ ही पहाड़ होंगे। तब आप रहेंगे कहाँ?" चूहे की बात में दम था। हाथियों ने आपस में सलाह की और उसी दिन से बिलों में रहना छोड़ दिया। वे खुले में रहने लगे।

और चूहे बिलों में। एकदम सुरक्षित। प्यारी



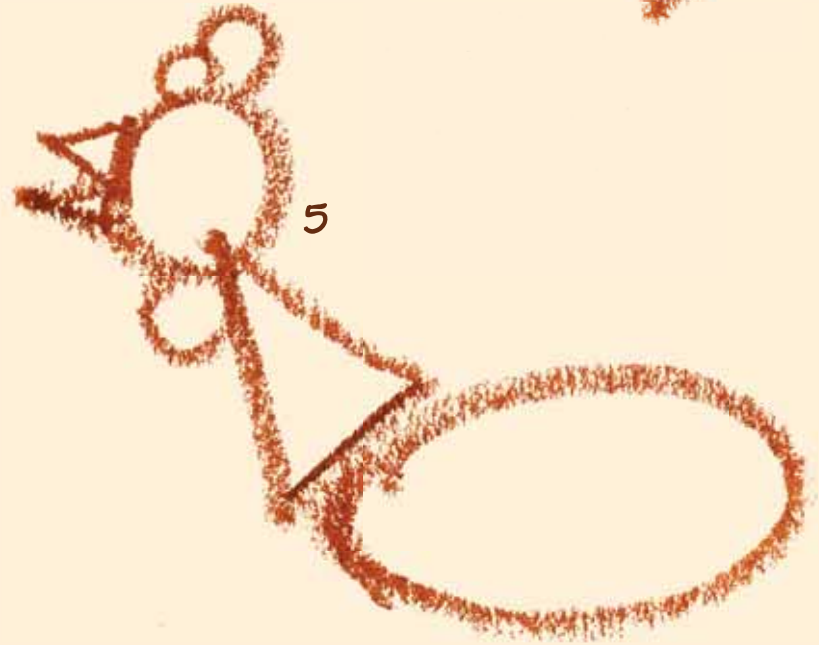
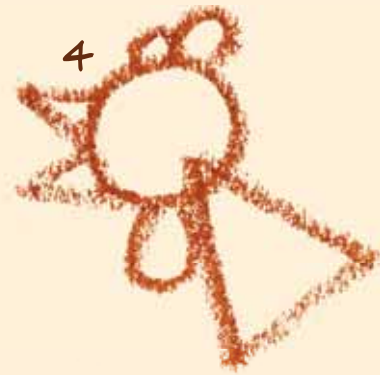
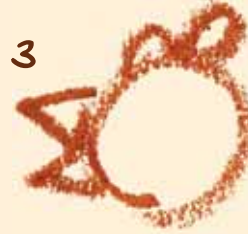
टोट बटोट गया बाज़ार

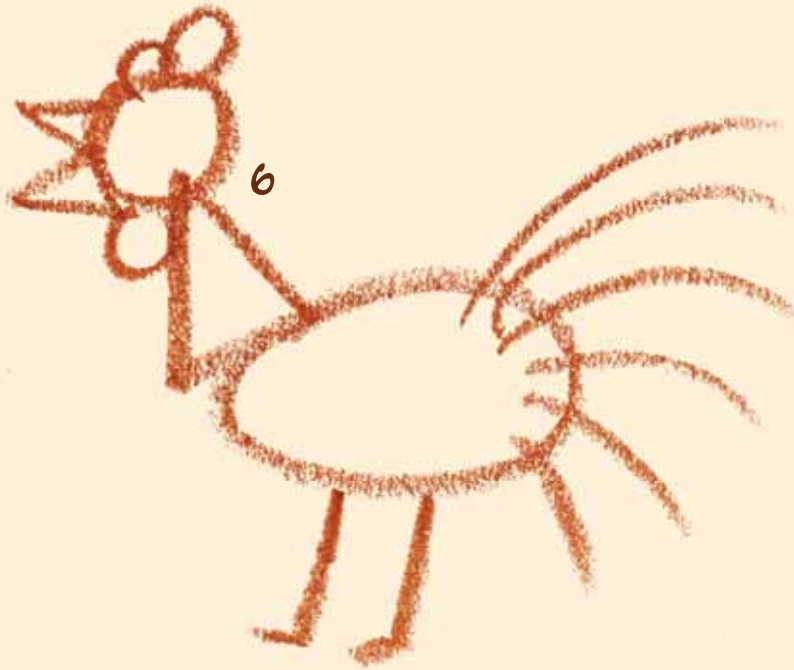
- सूफी मुस्तफा तबस्सुम

टोट बटोट गया बाज़ार
लेकर आया मुर्गे चार
हर मुर्गे की एक-एक मुर्गी
हर मुर्गी के अण्डे चार
हर अण्डे में दो-दो चूज़े
हर चूज़े की चोंचें आठ
हर इक चोंच में छह-छह लड्डू
हर लड्डू के दाने साठ
कितने दाने बन गए यार
जल्दी-जल्दी करो शुमार

चलो मुर्गी बनाएँ...

चित्र - विभूति पाण्डे





गाय ओ गाय
तू कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
घास की तलाश में

चींटी ओ चींटी
तू कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
चीनी की तलाश में।



बिल्ली ओ बिल्ली
तू कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
चूहे की तलाश में

चूहे ओ चूहे
तू कहाँ गया था?
अरे, यहीं था पास में
चिन्दी की तलाश में

गाय ओ गाय

साँप ओ साँप
तू कहाँ गया था?
अरे, यहीं था पास में
चूहे की तलाश में

बया ओ बया
तू कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
..... की तलाश में।

कुत्ते ओ कुत्ते
तू कहाँ गया था?
अरे यहीं था पास में
..... की तलाश में

पल्लवी

..... की जगह तुम
क्या रखना चाहोगे?



दरबान

तारा के स्कूल में एक दरबान चाचा हैं। उनकी पगड़ी उसे बहुत पसन्द है। स्कूल में लोग आते हैं। स्कूल से लोग जाते हैं। दरबान चाचा सबके लिए गेट खोलते हैं। उनका काम यही है। गेट खोलना। गेट बन्द करना।

तारा को उनसे बातें करना अच्छा लगता है। पर वह उनसे ज़्यादा देर बात नहीं कर पाती। कोई न कोई आ जाता है। और दरबान चाचा को गेट खोलने दौड़ना पड़ता है। तारा ने एक बार दरबान चाचा से पूछा, "आप अब तक कुल कितनी बार गेट खोल चुके होंगे?"



चित्र: वन्दना बिष्ट



दरबान चाचा ने सिर खुजलाते हुए कहा, "पता नहीं।" एक दिन उसने दरबान चाचा से पूछा, "चाचा, क्या आने-जाने वाले खुद गेट नहीं खोल सकते?" दरबान चाचा हँसकर बोले, "तुम खोल सकती हो?" "अभी नहीं पर थोड़ी और बड़ी हो जाऊँगी तो खोल लूँगी।" तारा ने कहा।

"मैं तो बस तुम्हारे जैसे बच्चों के लिए

गेट खोलने को यहाँ हूँ। जब तुम बड़ी हो जाओगी। और ये गेट खुद खोलने लगोगी तब मैं ये नौकरी छोड़ दूँगा।"

"फिर आप मेरे साथ हॉकी खेलोगे?"

"ज़रूर खेलूँगा।" दरबान चाचा ने ठहाका लगाते हुए कहा।

तभी गेट पर दस्तक हुई। और दरबान चाचा गेट खोलने दौड़ गए।

छंदी

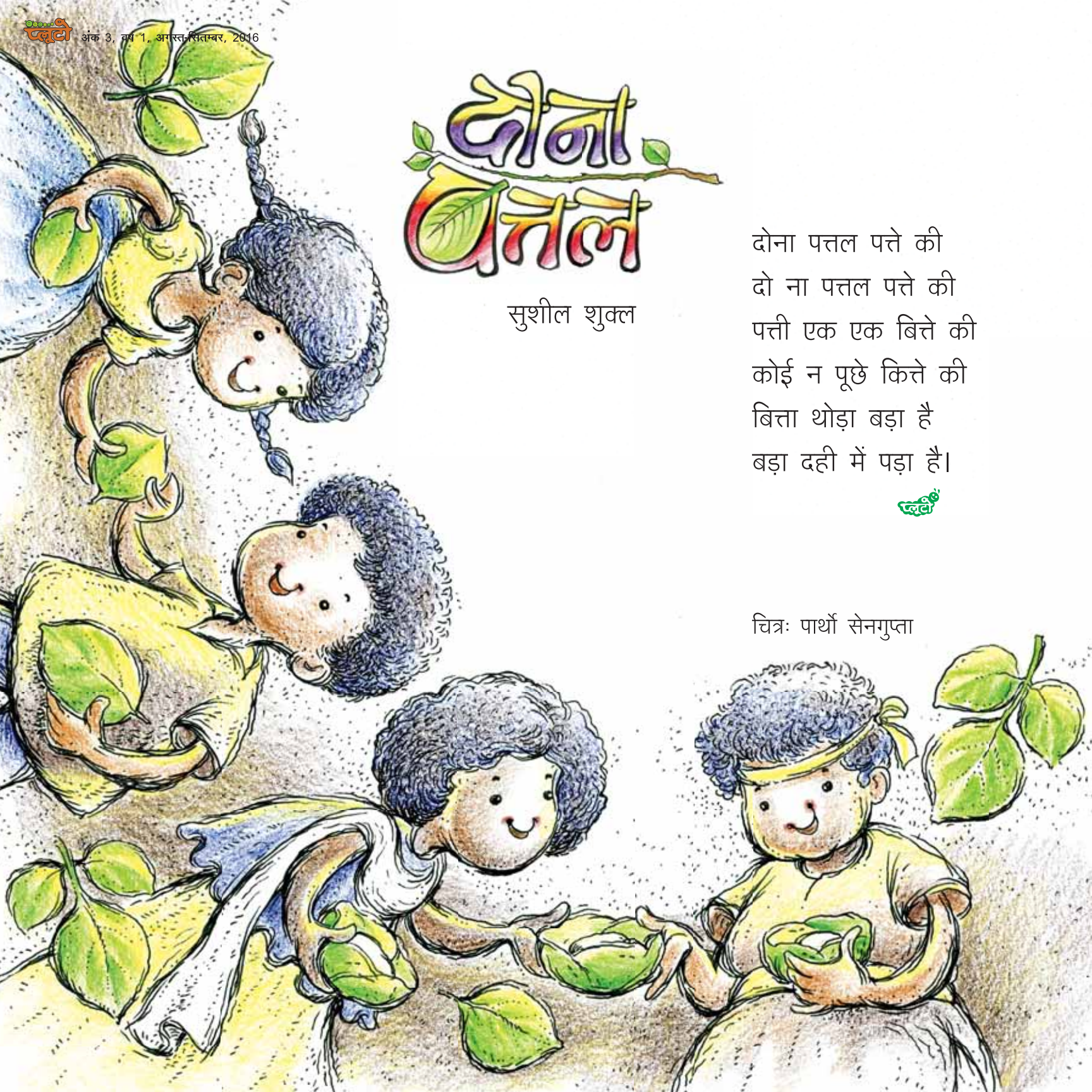
दोना पत्तल

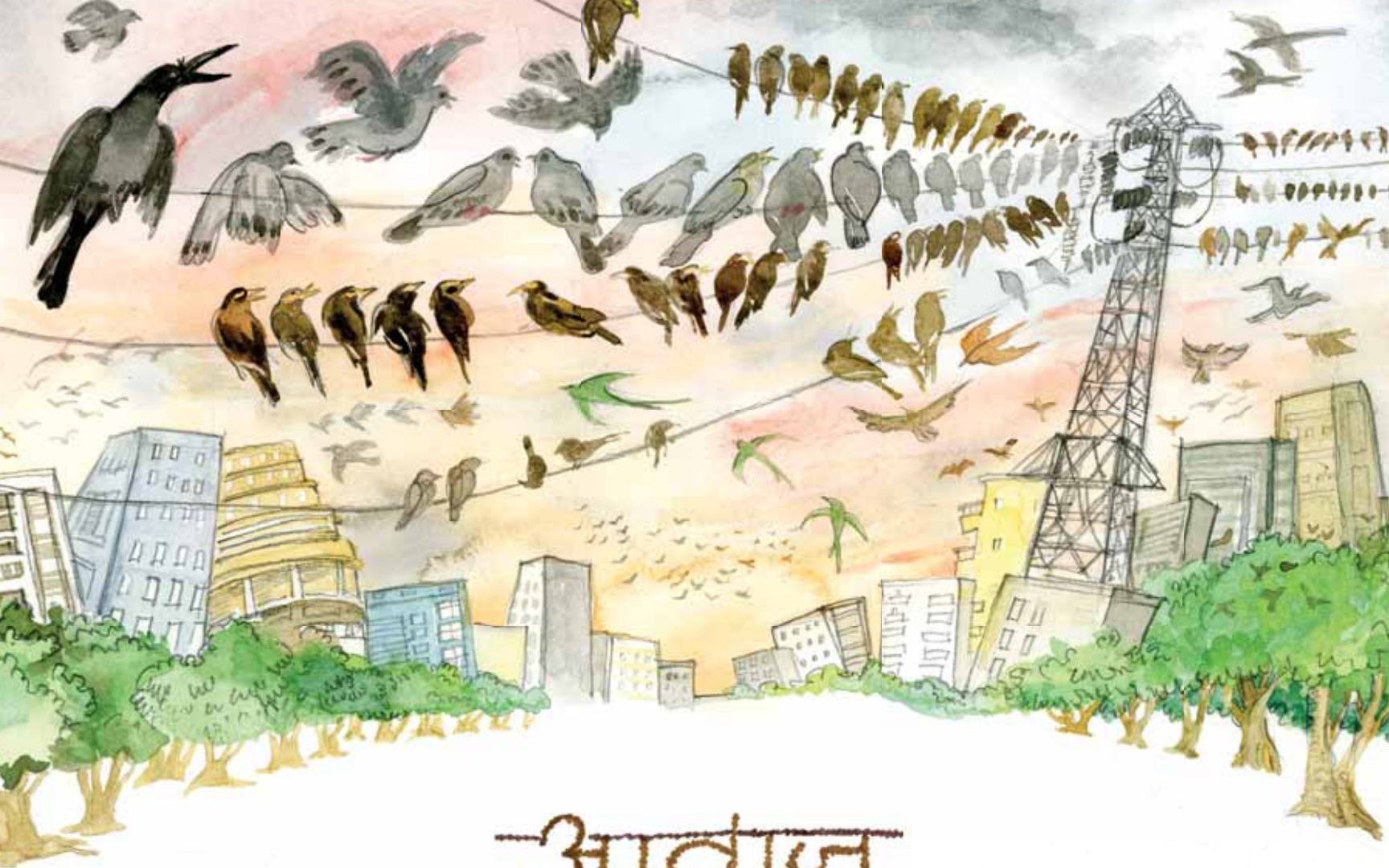
सुशील शुक्ल

दोना पत्तल पत्ते की
दो ना पत्तल पत्ते की
पत्ती एक एक बित्ते की
कोई न पूछे कित्ते की
बित्ता थोड़ा बड़ा है
बड़ा दही में पड़ा है।

पल्लवी

चित्र: पार्थो सेनगुप्ता





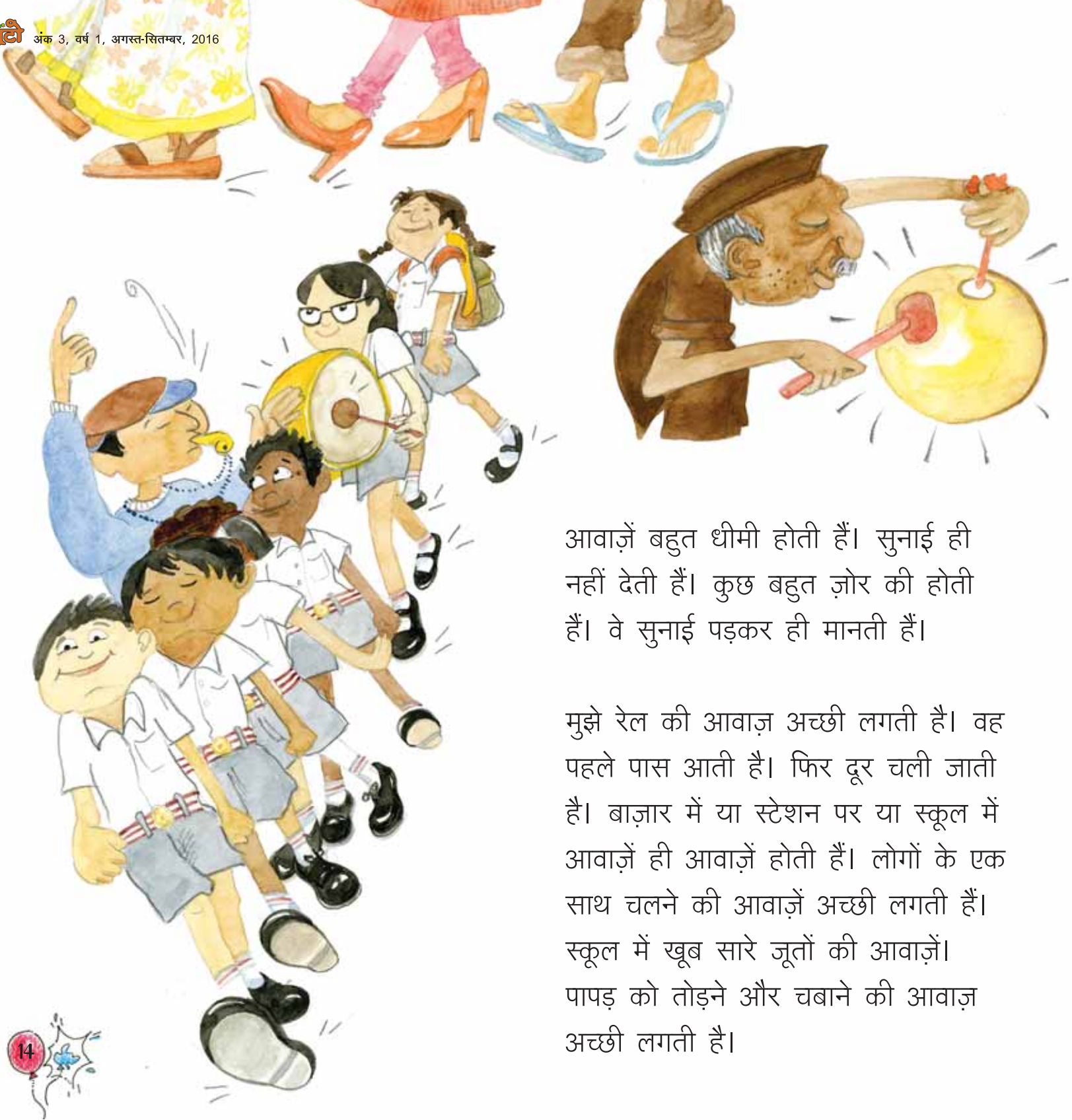
आवाज़

मुझे आवाज़ें अच्छी लगती हैं। सुबह-शाम चिड़ियाँ चहचहाती हैं। वे जाने क्या बोल रही होती हैं। बोलती हैं तो सब बोलती हैं। सुनती होंगी तो फिर सब सुनती होंगी। सुबह वे शायद सब चिड़ियों को जगाने के लिए बोलती हैं। और शाम को? पर कभी-

कभी कोई एक चिड़िया बोलती है। उसकी आवाज़ सुनकर एक और चिड़िया बोलती है।

मुझे कौआ बहुत पसन्द हैं। वह बोलता है तो पूरी चोंच खोलकर बोलता है। ज़ोर से बोलता है। और कम बोलता है। कुछ

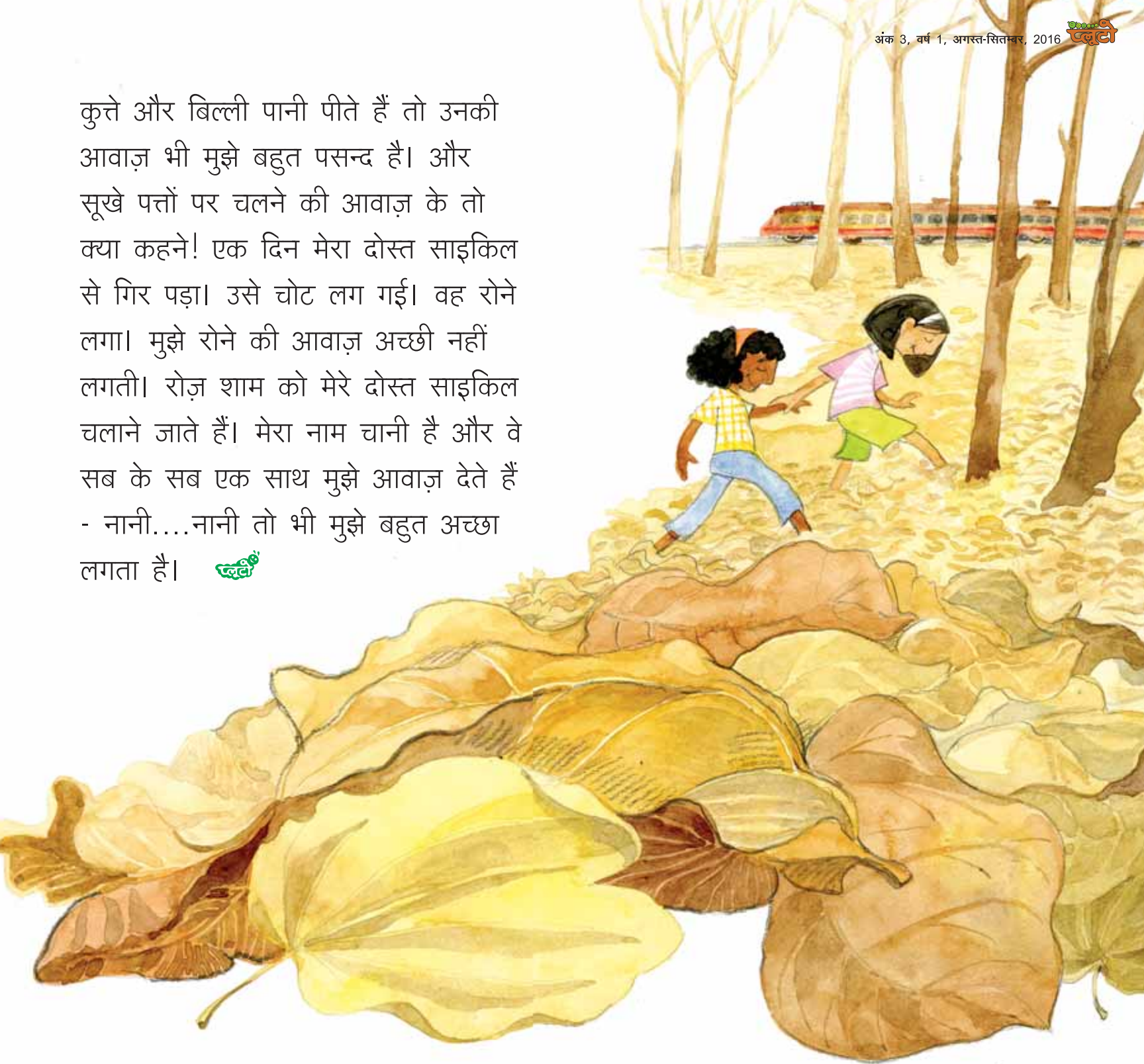




आवाज़ें बहुत धीमी होती हैं। सुनाई ही नहीं देती हैं। कुछ बहुत ज़ोर की होती हैं। वे सुनाई पड़कर ही मानती हैं।

मुझे रेल की आवाज़ अच्छी लगती है। वह पहले पास आती है। फिर दूर चली जाती है। बाज़ार में या स्टेशन पर या स्कूल में आवाज़ें ही आवाज़ें होती हैं। लोगों के एक साथ चलने की आवाज़ें अच्छी लगती हैं। स्कूल में खूब सारे जूतों की आवाज़ें। पापड़ को तोड़ने और चबाने की आवाज़ अच्छी लगती है।

कुत्ते और बिल्ली पानी पीते हैं तो उनकी आवाज़ भी मुझे बहुत पसन्द है। और सूखे पत्तों पर चलने की आवाज़ के तो क्या कहने! एक दिन मेरा दोस्त साइकिल से गिर पड़ा। उसे चोट लग गई। वह रोने लगा। मुझे रोने की आवाज़ अच्छी नहीं लगती। रोज़ शाम को मेरे दोस्त साइकिल चलाने जाते हैं। मेरा नाम चानी है और वे सब के सब एक साथ मुझे आवाज़ देते हैं - नानी....नानी तो भी मुझे बहुत अच्छा लगता है। छंदी



समुद्र से पानी जाता कहाँ ?

झरनों, तालाबों और दलदलों से निकलकर बड़ी नदियों से समुद्र में। सभी ओर से नदियाँ आकर समुद्र में मिलती हैं। जब से यह दुनिया बनी है। तब से ऐसा होता आ रहा है।

-लेव तालस्ताय



चित्र: अजंता गुहाठाकुरता

पर समुद्र से पानी जाता कहाँ है? वह किनारों से छलकता क्यों नहीं है? समुद्र से पानी भाप बनता है। भाप ऊपर उठती है। भाप से बादल बनते हैं। हवा बादलों को उड़ाती है। बादलों को दूर-दूर तक फैला देती है। बादलों से पानी ज़मीन पर गिरता है। ज़मीन से बहकर दलदलों और नालों में पहुँच जाता है। नालों से नदियों में पहुँचता है।

नदियों से समुद्र में। समुद्र से पानी फिर भाप बनकर ऊपर उठता है। और भाप से बादल बनते हैं। हवा इन बादलों को उड़ाकर दूर-दूर फैला देती है...





दरवाजा



चिड़िया



औरव



मोबाइल



घर



बालों
कम्रा खुला

1. तुम बन्द । मैं खुला ।

3. मुझे
बन्द भी
तो तुम
ही करती
हो । इसलिए तुम बन्द मैं खुला ।



छाता

स्कूल

दोस्त

बारिश

धूप

छिपकली

मम्मी

टीचर

पापा

क्या बन्द?

2. तुम्हें
मैं ही ले
खोलती हूँ।
इसलिए
तुम बन्द।
मैं खुली।



तारिक का सूरज

शशि सबलोक

तारिक का मन रात को खेलने को करता था। पर उसे घर से बाहर कौन जाने देता!

तो एक शाम उसने एक कागज़ पर सूरज बनाया। उसे सेम की बेल पर टाँग दिया। बेल धीरे-धीरे लम्बी हुई और आम के सर तक पहुँच गई। एक रात अचानक एक छोटा-सा सूरज चमकने लगा। उस पेड़ पर एक उल्लू भी रहता था। वो दिन भर सोता था और रात में खाना ढूँढने निकलता था। उस रात वो उड़ने ही वाला था कि सूरज चमकने लगा। उल्लू को रोशनी में कम दिखाई देता है। रात में सूरज का चमकना उसे अच्छा नहीं लगा। उसे भूख लगी थी। वो तारिक की खिड़की पर बैठ गया। तारिक ने उसे दूध-रोटी दी। उल्लू बोला, “मुझे



चूहे और कीड़े खाने हैं। थोड़ी देर के लिए तुम अपना सूरज नीचे उतार लो।" तारिक ने एक छड़ी से सूरज नीचे उतार लिया। उल्लू ने पेट भर खाना खाया। फिर आम पर लौट आया। तारिक ने सूरज को फिर से बेल पर टाँग दिया।

चाँद को यह बात ठीक न लगी। उसने हवा को अपनी परेशानी बताई। हवा दौड़ती हुई बेल के पास आई। और कागज़ के सूरज

को उड़ाकर आसमान में ले गई।

हमें एक ही सूरज दिख पाता है। पर कहते हैं आसमान में कई सूरज हैं। उन्हीं में एक तारिक का सूरज है। सुबह से शाम तक हम रोशनी में रहते हैं। इसमें से थोड़ी-सी रोशनी तारिक के सूरज की भी है।

क्या तुम अपना सूरज या चाँद आसमान में भेजना चाहोगे? छद्म

1. इतना सा? जीरा
ऊँट के मुँह में जैसा।

2. तुझे कब एक
बड़ी चॉकलेट
मिलनेवाली है।

3. तेरे मुँह में
घी-शक्कर!



चटनियाँ

ऊँट के मुँह में जीरा
और बंसानो के मुँह में
घी-शक्कर! वाह!

एक दिन...

देर से पहुँची मैं स्कूल
एकदम चिल एकदम कूल
सर ने मेरा बैग उतारा
और दिया चम्पा का फूल



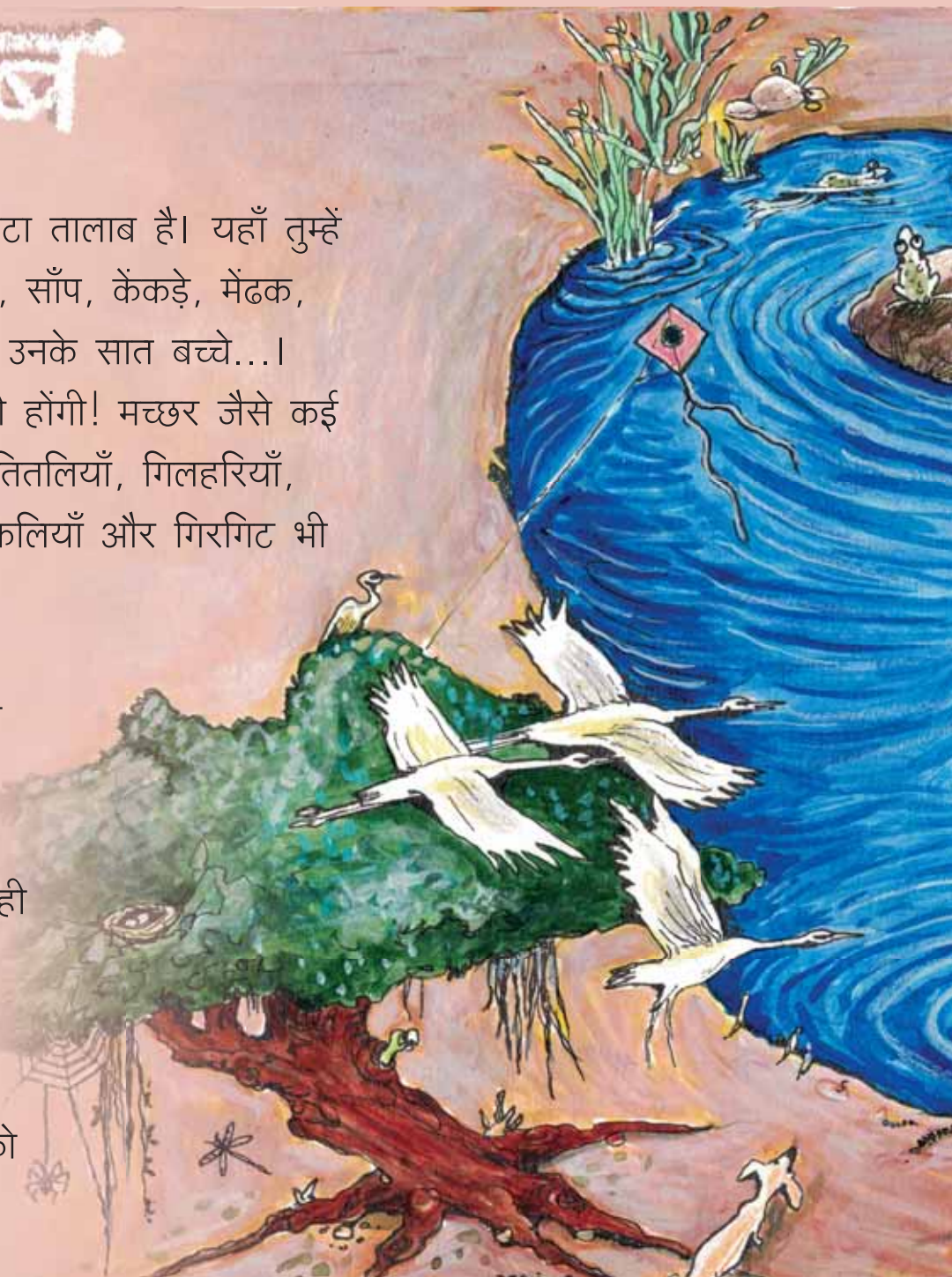


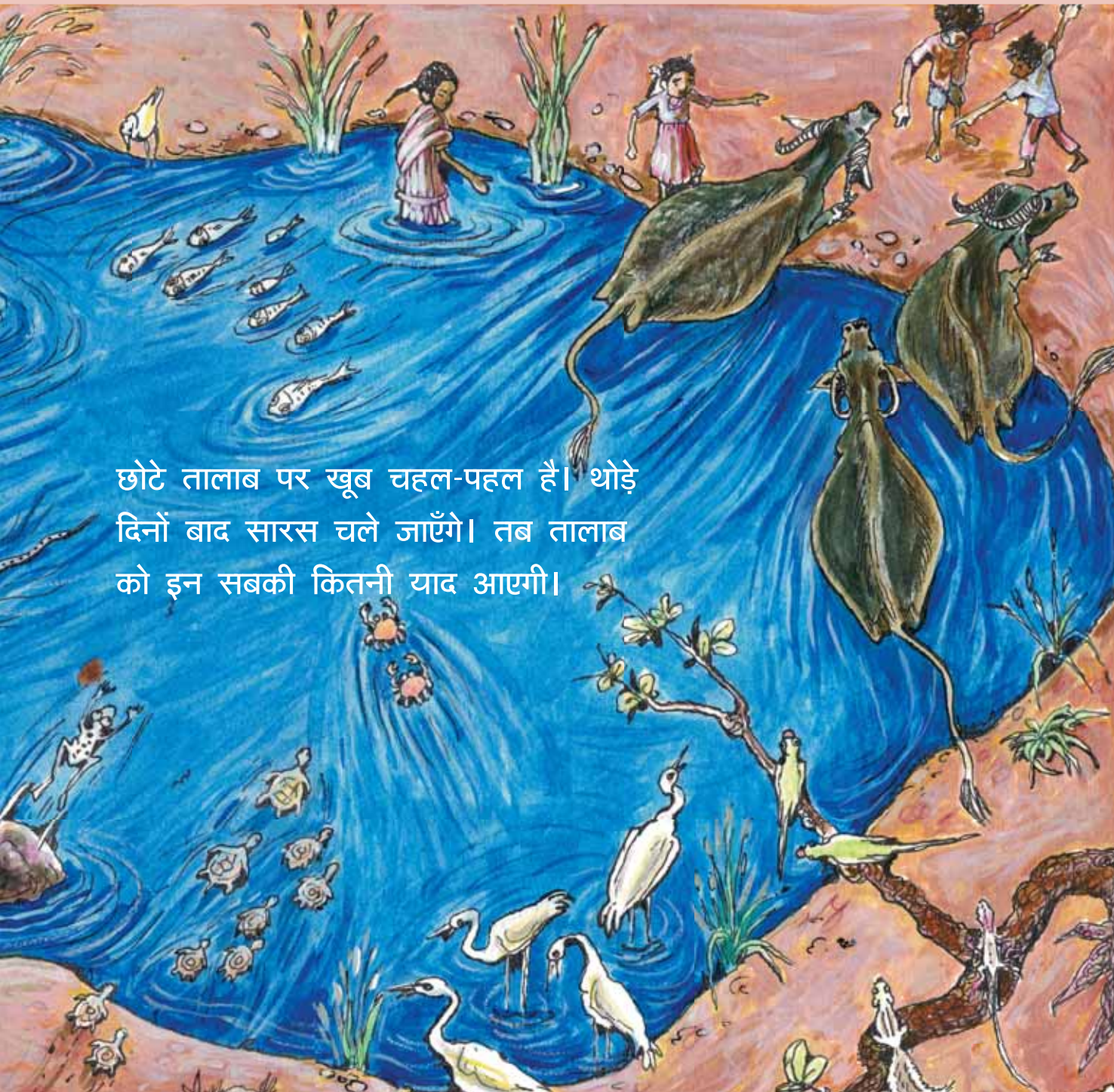
चित्र: वन्दना बिष्ट

तालाब

इस तालाब का नाम छोटा तालाब है। यहाँ तुम्हें कई लोग दिखेंगे – केंचुए, साँप, केंकड़े, मेंढक, कनखजूरे, दो कछुए और उनके सात बच्चे...। मछलियाँ पता नहीं कितनी होंगी! मच्छर जैसे कई उड़ाकू तुम्हें वहाँ मिलेंगे। तितलियाँ, गिलहरियाँ, चींटियाँ। कभी-कभी छिपकलियाँ और गिरगिट भी इधर चले आते हैं।

तालाब के किनारे एक पेड़ है। इस पर मकड़ियों के जाले हैं। और चिड़ियाँ...उनका तो पूछो ही मत – कौए, मैना, तोते, किंगफिशर, फाख्ता...। आजकल सर्दियों के दिन हैं। मैं रोज़ इस तालाब को देखने आती हूँ। यहाँ इन दिनों सारस आए हुए हैं।





छोटे तालाब पर खूब चहल-पहल है। थोड़े दिनों बाद सारस चले जाएँगे। तब तालाब को इन सबकी कितनी याद आएगी।

चित्र: प्रशान्त सोनी

पिंकू के पापा

प्रभात

इंजेक्शन को देखते ही पिंकू ने ऐसा शोर मचाया कि कमरा हिलने लगा। चीज़ें गिरने लगीं।

पिंकू के पापा डरकर कमरे से दूर गली में चले गए।

“अब क्यों शोर मचा रहे हो? इंजेक्शन लगे दो मिनट हो चुके हैं।” डॉक्टर ने पिंकू से कहा।

पिंकू खुश हो गया। पापा के साथ घर आ गया।

दो महीने बाद पिंकू को फोड़ा हो गया। डॉक्टर को देखते ही पिंकू ने ऐसा शोर मचाया कि कमरा हिलने लगा। चीज़ें गिरने लगीं।

चित्र: अजंता गुहाठाकुरता

पिंकू के पापा से यह देखा नहीं जाता था। वे कमरे से दूर गली में चले गए।

“अब क्यों शोर मचा रहे हो? चीरा लगे दो मिनट हो चुके हैं।”
डॉक्टर ने पिंकू से कहा।

पिंकू खुश हो गया। पापा के साथ घर आ गया।



दो महीने बाद गिरने से पिंकू के दो दाँत हिल गए।

दाँतों के डॉक्टर को देखते ही पिंकू ने ऐसा शोर मचाया कि कमरा हिलने लगा। चीज़ें गिरने लगीं।

पिंकू के पापा से यह देखा नहीं जाता था। वे कमरे से दूर गली में चले गए।
“अब क्यों शोर मचा रहे हो? हिले हुए दाँत निकाले दो मिनट हो चुके हैं।”
डॉक्टर ने पिंकू से कहा।



पिंकू खुश हो गया। पापा के साथ घर आ गया।

दो महीने बाद पिंकू के पापा के गिरने से हड्डी खिसक गई।

हड्डी के डॉक्टर को देखते ही पिंकू के पापा

ने ऐसा शोर मचाया कि कमरा हिलने लगा। चीज़ें गिरने लगीं।

पिंकू और उसकी मम्मी, पापा के पास ही रहे।

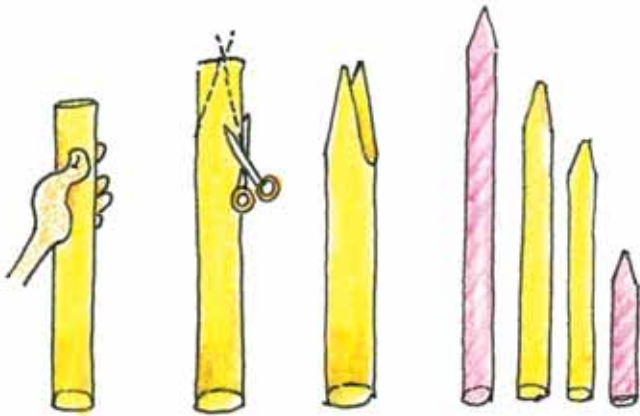
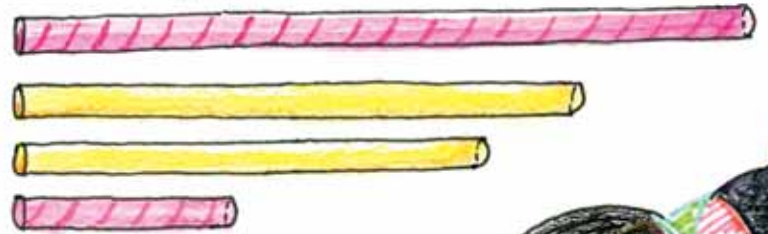
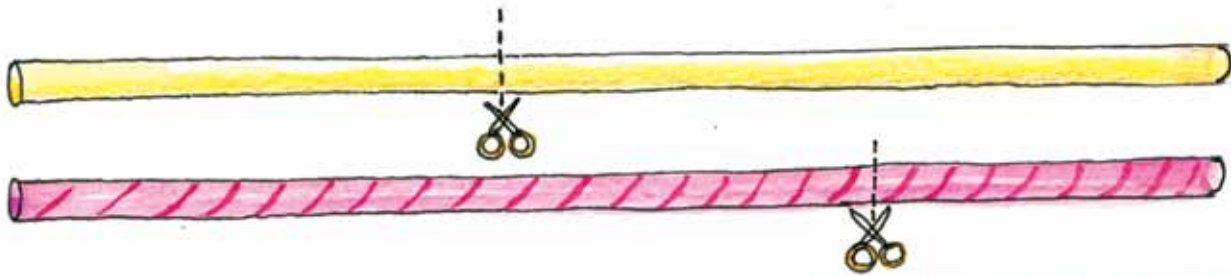
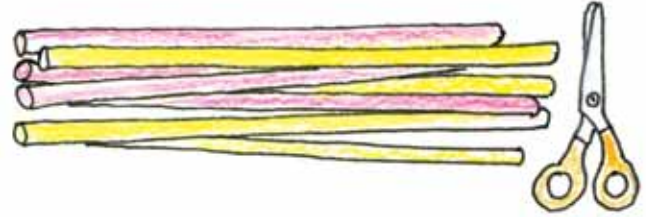
“अब क्यों शोर मचा रहे हो? हड्डी बिठाए दो मिनट हो चुके हैं।” डॉक्टर ने पिंकू के पापा से कहा।

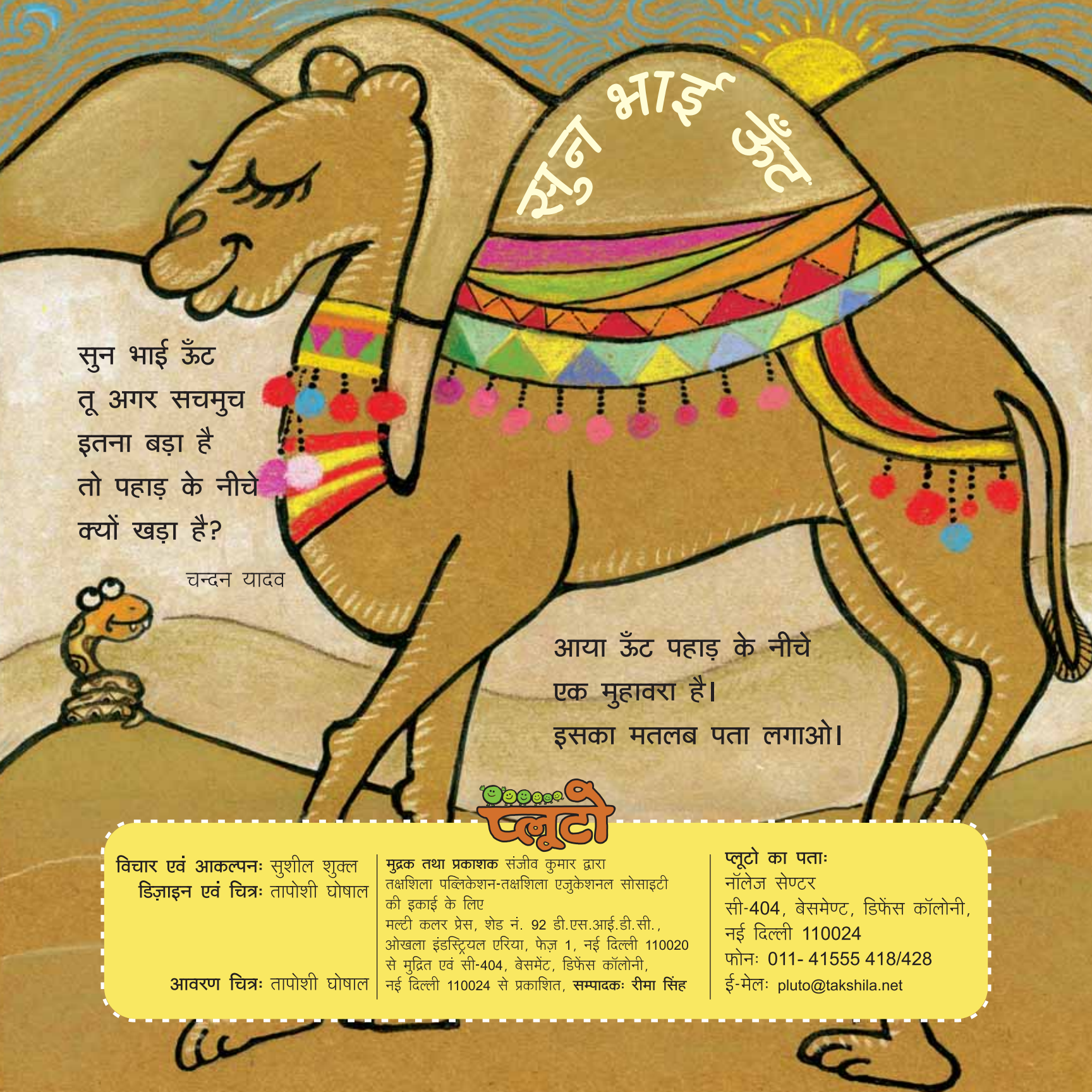
पापा खुश हो गए। पिंकू और उसकी मम्मी, उन्हें लेकर घर आ गए। प्युटी



आओ घर में बनाएँ बाजा विनय सप्रे

अपने घर के बड़ों की मदद से इसे बनाओ।
इसे ठीक से बजाना सीखने के लिए तुम्हें
बार-बार कोशिश करनी पड़ेगी।





सुन भाई ऊँट

सुन भाई ऊँट
तू अगर सचमुच
इतना बड़ा है
तो पहाड़ के नीचे
क्यों खड़ा है?

चन्दन यादव

आया ऊँट पहाड़ के नीचे
एक मुहावरा है।
इसका मतलब पता लगाओ।


प्लूटो

विचार एवं आकल्पन: सुशील शुक्ल
डिज़ाइन एवं चित्र: तापोशी घोषाल

आवरण चित्र: तापोशी घोषाल

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा
तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी
की इकाई के लिए
मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी.,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020
से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, सम्पादक: रीमा सिंह

प्लूटो का पता:

नॉलेज सेण्टर
सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024
फोन: 011- 41555 418/428
ई-मेल: pluto@takshila.net



स्कूल बस स्कूल बस
स्कूल - घर - स्कूल बस

आती है घर स्कूल बस
लाती है घर स्कूल बस
स्कूल - घर - स्कूल बस
स्कूल बस स्कूल बस 



चित्र: वन्दना बिष्ट



कुइयां मुइयां हइया हुइया

राजशेखर

अदम बदम अदम बदम
चलो चलें कदम-कदम

रात के हम टिम टिम टिम
भोर के हम चम चम चम
खर खर खरगोश हम
टिपिर टिपिर ओस हम

खेत खूत खात बोले
पटर पटर पात बोले

माटी के कुइयां मुइयां
जंगल के हइया हुइया
कुइयां मुइयां हइया हुइया
कुइयां मुइयां हइया हुइया कुइयां मुइयां हम